

पाठ 33 अध्याय 31 और 32

19वीं सदी के एक प्रतिष्ठित ईसाई विद्वान जी. बी. ये ने गिनती के अध्याय 31 को "मिद्यानियों का विनाश" कहा है। यह बहुत कठोर और सीधा लगता है, लेकिन वास्तव में यह अध्याय ठीक इसी बारे में है।

पिछले सप्ताह हमने गिनती 31 का संक्षिप्त अवलोकन किया था और इस सप्ताह हम इसे थोड़ा और करीब से देखेंगे। हालाँकि, मैं एक चिंता को संबोधित करके शुरू करना चाहूँगा जो मेरे कुछ प्रिय मित्रों, और शायद आप जो सुन रहे हैं, को सामान्य रूप से पुराने नियम के बारे में है और वह यह है कि इसमें बहुत अधिक हत्या और रक्तपात है और इसका अधिकांश हिस्सा इस्राएल के परमेश्वर द्वारा इस्राएल के (और इसलिए परमेश्वर के) शत्रुओं पर आदेश दिया गया है।

मैं कुछ उच्च शिक्षित लोगों को जानता हूँ (जिनमें यहूदी और ईसाई विद्वान, लेखक, रब्बी और पादरी शामिल हैं) जो स्पष्ट रूप से कहते हैं कि वे पुराने नियम के ईश्वर को नए नियम के ईश्वर के साथ नहीं जोड़ सकते हैं; एक ईश्वर जो राष्ट्रों पर विजय प्राप्त करने में इस्राएल का नेतृत्व करता है बनाम एक ईश्वर जो सभी राष्ट्रों के लिए विनम्रतापूर्वक खुद को बलिदान करता है। फिर भी, कोई भी इस बात से इनकार नहीं करता है कि हम अपनी बाइबिल में ईश्वर के इन दोनों गुणों को देखते हैं। तो हमारी समस्या बुद्धिमत्ता की नहीं बल्कि आस्था की है, हम उस ईश्वर को चाहते हैं जिसे हमारी मानवीय संवेदनाएँ पसंद करती हैं, न कि वह जो है। इसलिए हम एकतरफा घोषणा करते हैं कि पुराने नियम का ईश्वर नए नियम के ईश्वर में बदल गया है; इसलिए नहीं कि ईश्वर का वचन ऐसा कहता है बल्कि इसलिए कि हम इससे अधिक सहज हैं, और ईसाइयों की यह प्रवृत्ति वास्तव में मूर्तिपूजा शब्द का कारण और परिभाषा दोनों है। मूर्ति ईश्वर की भौतिक छवि है जो मनुष्य के मन से आती है, जिसे मानव दर्शन, विशेषताओं और इच्छाओं के अनुसार ढाला और आकार दिया जाता है और गुण दिए जाते हैं। जब हम पवित्र शास्त्रों के ईश्वर की बजाय उन गुणों और विशेषताओं की पूजा करते हैं, तो वह मूर्ति पूजा है। इसके अलावा कोई रास्ता नहीं है और इसे कोई अच्छा ईसाई नाम देना इसे ठीक नहीं बनाता है।

आजकल ईसाई धर्म से संबंधित विषयों पर आधारित कई किताबें चल रही हैं और मैं एक बहुत ही लोकप्रिय नई किताब के बारे में सोच रहा हूँ जिसका नाम मैं नहीं लूँगा, जो ईश्वर को मानवीय बनाने के विभिन्न तरीकों को खोजकर उसे नीचा दिखाने का बहुत प्रयास करती है। हाँ,, ईश्वर को मानवीय बनाना उसकी महिमा को कम करना और अपवित्र करना है। मनुष्य यहोवा से बहुत कमतर है। वास्तव में हम एक ही ब्रह्मांडीय क्षेत्र में भी नहीं हैं। इसलिए उसे हमारे बराबर

मानने का प्रयास करना उसके अतुलनीय दिव्य सार का बहुत बड़ा अपमान है। लेकिन वास्तव में ईश्वर को मानवीय बनाने का यह प्रयास ज्ञानवाद की पुरानी दुनिया में लौटने की दिशा में अगला नया कदम है। पहला कदम मनुष्यों को एक पायदान नीचे ले जाना (मानवता को अमानवीय बनाना) था ताकि उन्हें जानवरों के बराबर माना जा सके। यह माँग करके लगभग सार्वभौमिक रूप से पूरी तरह से पूरा किया गया है कि डार्विनियन विकासवाद को निर्विवाद तथ्य के रूप में पढ़ाया और स्वीकार किया जाए। धारणा यह है कि हम ईश्वर द्वारा नहीं बनाए गए थे, बल्कि केवल जानवरों से विकसित हुए हैं और इस प्रकार हम हैं किसी अन्य पशु प्रजाति से अधिक कुछ नहीं है।

तो उस पैटर्न को देखें जिसे ये भ्रामक पुस्तकें हम पर थोपने की कोशिश करती हैं। हमारे पवित्र ग्रंथों के अनुसार ईश्वर मनुष्यों से ऊपर है, और मनुष्य जानवरों से ऊपर है। लेकिन न्यू एज आंदोलन ईश्वर को मनुष्यों के लगभग बराबर और मनुष्यों को जानवरों के लगभग बराबर बनाने की कोशिश करके इसका मज़ाक उड़ाता है और दुनिया भर के चर्च और पादरी नरक से आए इस धोखे में फँस गए हैं, उन्हें लगता है कि यह उनके मण्डली के लिए ईश्वर के बारे में एक गर्मजोशी और मधुर भावना प्राप्त करने का एक तरीका है, उन्हें एक दयालु दादा और मित्र के रूप में अधिक देखना, और एक शक्तिशाली निर्माता और राजा के रूप में कम देखना जो सभी चीजों से ऊपर है और हमसे उसके प्रति वफादारी और आज्ञाकारिता की माँग करता है।

दोस्तों, यह आधुनिक युग की मूर्तिपूजा है। यह परमेश्वर या देवताओं की छोटी-छोटी मूर्तियों बनाने और उनके सामने झुकने से बिलकुल अलग नहीं है। यह हमारी सुविधा के लिए परमेश्वर को हमारी छवि में बनाना है। बाइबल में हम जिन मूर्तियों और छवियों के बारे में पढ़ते हैं, वे या तो इंसान थे या जानवर, है न? सभी देवताओं को मानवीय गुण दिए गए थे, वे पार्टी करते थे, शराब पीते थे, सेक्स करते थे और बच्चे पैदा करते थे, चिंतित रहते थे, मारे जा सकते थे, उन्हें खाना खाने की ज़रूरत होती थी, उन्हें धोखा दिया जा सकता था, और उन्हें चापलूसी पसंद थी, और अगर आप ईसाई साहित्य के रूप में छिपे इस नए युग की बकवास के आगे झुक गए हैं, तो आपको फिर से सोचने की ज़रूरत है। उन किताबों को एक तरफ रख दें और अपनी बाइबल उठाएँ। उन उपन्यासों और प्रकाशनों को एक तरारू रख दें जो सारगर्भित गद्य और अर्थ-सत्य से भरे हुए हैं, जो आपको यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि यह आपको परमेश्वर के करीब ले जाएगा जबकि वास्तव में यह आपकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करके और सच्चाई को तोड़-मरोड़ कर आपको दूर ले जाता है। बहुत से लोग ऐसा इसलिए करते हैं (मुझे लगता है) क्योंकि उन्हें लगता है कि बाइबल उनके सिर के ऊपर है; आप बाइबल को समझ सकते हैं। इसे सामान्य, हर रोज़ के इंसानों के समझने के लिए बनाया गया था। लेकिन परमेश्वर के वचन को

समझने से ज़्यादा हमें परमेश्वर के वचन पर विश्वास करना और उसका पालन करना है और हमें परमेश्वर को वैसे ही स्वीकार करना है जैसे वह है, न कि जैसा हम चाहते हैं कि वह हो।

इसलिए मुझे यह बात मनोरंजक लगती है अगर दिमाग सुन्न करने वाली नहीं। तो यह तर्कहीन है कि वही लोग जो यहाँ गिनती में मिद्यानियों के कत्लेआम पर निराश और माफ़ी माँगते हैं, वे आगिडन के आने और उन अरबों लोगों के कुल, भयानक, निर्दयी विनाश (हमारे प्रभु और मसीहा द्वारा) पर खुशी मनाएँगे और गीत गाएँगे जो राष्ट्र बनाते हैं, लेकिन जो ईश्वर के अधीन नहीं होंगे। यहाँ समझने वाली बात यह है। सबसे पहले, चाहे तोरह हो या सुसमाचार, यह वही ईश्वर है जिसके गुण वही हैं और जो वही सिद्धांत प्रदर्शित करते हैं। दूसरा, इतिहास में हर समय यहोवा ने उन लोगों को मारने के लिए क्षण चुने हैं जो उसके नहीं हैं.... कभी—कभी ईश्वरीय प्रतिशोध के लिए, और कभी—कभी उन लोगों की खातिर उनका बलिदान किया जाता है जो उसके हैं, और तीसरा, उसके शत्रुओं का सबसे भयानक और सबसे भयानक वध और रक्तपात अभी होना बाकी है। यह पुराने नियम में दर्ज नहीं है, यह हमारे भविष्य में है। आदम और हव्वा के बाद उसके क्रोध और दैवीय प्रतिशोध के हल्के रूप घटित हुए, यह महाप्रलय के समय वैश्विक स्तर पर हुआ, यह कुलपिताओं के युग में हुआ, यह मिस्र में फसह की रात को हुआ, और यह गिनती की पुस्तक में मिद्यानियों के साथ घटित हो रहा है।

बाइबल में आगे चलकर परमेश्वर द्वारा नियुक्त बहुत सी हत्याएँ होगी जब इस्राएल कनान पर आक्रमण करेगा। बाद में जब दारुद अपने राज्य का विस्तार करेगा। हम अंततः लगभग 1/4 मिलियन असीरियन सैनिकों के बारे में पढ़ेंगे, जो रातों—रात मर गए, क्योंकि उन्होंने पवित्र शहर यरुशलेम को उखाड़ फेंकने की योजना बनाई थी, और यहोवा के हाथों मारे गए। 20वीं और 21वीं सदी में हमने देखा है कि कैसे राष्ट्रों ने अंततः स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रयास किया।

यहूदी लोगों को विलुप्त कर दिया गया क्योंकि प्रभु ने उन राष्ट्रों को शक्ति दी जो यहूदी लोगों को नष्ट करना चाहते थे।

ऐसी चीज़ को रोकें, और हम अपने नए नियम की प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पढ़ते हैं कि हमारा "नम्र और विनम्र उद्धारकर्ता" एक खूंखार शेर के रूप में लौटता है और हाथ में तलवार लेकर, एक अजेय योद्धा प्रमुख के रूप में परमेश्वर की सेनाओं का नेतृत्व करता है, जो सभी युद्धों को समाप्त करने के लिए अंतिम युद्ध में परमेश्वर के शत्रुओं के विरुद्ध लड़ता है, जहाँ रक्तपात की मात्रा इतनी अधिक होगी कि कल्पना भी चौंका देगी।

हमारे पास ऐसा परमेश्वर नहीं है जो आनन्दपूर्वक हत्या करता हो, हमें बताया गया है कि यह उसकी इच्छा है कि सभी बचाए जाएँ, परन्तु वह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उन मनुष्यों को नष्ट करता है जिन्हें वह दुष्ट समझता है, और उन उद्देश्यों में से एक है, इस्राएल को बचाना और उन सभी की रक्षा करना जो उसके हैं।

लेकिन यहाँ एक बात है जिसे हमें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। प्रभु हमेशा सबसे पहले अपने लोगों से निपटते हैं, और फिर उन बाहरी लोगों से जो उनके लोगों को सताते हैं। दूसरे शब्दों में, वही मूलभूत ईश्वर-सिद्धांत इस्राएल पर शासन करते थे जैसा कि पृथ्वी के सभी राष्ट्रों पर था, और उन सिद्धांतों में सबसे प्रमुख यह है कि सभी अपने पापों के लिए नाश हो जाएँगे यदि वे ईश्वर की कृपा को एक बचाव मार्ग के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं। हम पहले ही पढ़ चुके हैं कि हजारों-हजार इस्राएलियों को प्रभु ने उनके विरुद्ध विद्रोह करने के लिए मार डाला, ठीक वैसे ही जैसे हमने हजारों गैर-यहूदियों को प्रभु द्वारा उनके विरुद्ध विद्रोह करने के लिए मार डाले जाने के बारे में पढ़ा है। इब्रानी और गैर-यहूदी पापियों का बड़े पैमाने पर विनाश एक पुराना नियम सिद्धांत नहीं है जिसे किसी तरह मसीह के आगमन के साथ त्याग दिया गया हो। परमेश्वर का न्याय क्रूस के नीचे समाप्त नहीं हुआ।

रोमियों 2 (उदाहरण के लिए) यह समझाने के लिए बहुत विस्तार से जाता है कि प्रभु यहूदी और गैर-यहूदी के साथ एक जैसा व्यवहार करेगा, और उन्हें अनुग्रह और विनाश दोनों में एक ही मानक के अधीन करेगा। रोमियों 2:5, परन्तु अपने हठ और हठीले मन के कारण तुम अपने लिये क्रोध संचय कर रहे हो जो क्रोध के दिन और परमेश्वर के सच्चे न्याय के प्रगट होनेवाले दिन में आएगा। 6 वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा। 7 जो लोग भलाई में धीरज से महिमा, और आदर, और अमरता, अर्थात् अनन्त जीवन की खोज में हैं, उन्हें मिलेगा। 8 पर जो स्वार्थी हैं और सत्य को नहीं मानते, वरन अधर्म को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा। 9 क्लेश और संकट हर एक मनुष्य के प्राण पर होगा जो बुरा करता है, पहिले यहूदी पर फिर यूनानी पर। 10 पर महिमा, और आदर, और शान्ति हर एक मनुष्य को मिलेगी जो भलाई करता है, पहिले यहूदी पर फिर यूनानी पर।

तो आज के पाठ के अनुसार: आइए हम याद करें कि हमने पिछले कुछ अध्यायों में क्या पढ़ा है, कि इब्रानी पुरुषों (परमेश्वर के अलग किए गए लोग) ने मोआबी और मिद्यानी महिलाओं के साथ घुलने-मिलने, अनैतिक यौन संबंध बनाने और मूर्तिपूजा में शामिल होने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। हालाँकि, यहाँ अपराध, प्रभु की नज़र में वास्तव में व्यभिचार है; प्रभु परमेश्वर

इस्राएल का पति है, लेकिन दुल्हन का दूसरे देवता के साथ संबंध है। व्यवस्था कहती है कि व्यभिचार का परिणाम मृत्यु है। इसलिए परमेश्वर के न्याय की माँग थी कि 24,000 से अधिक इस्राएली मोआब के देवता केमोश के साथ व्यभिचार के कारण दैवीय महामारी से मर जाएँ। जैसा कि परमेश्वर सिद्धांत है, अपने लोगों के साथ व्यवहार करने के बाद प्रभु ने उन लोगों की ओर रुख किया जो उसके लोग नहीं हैं, ताकि उनके साथ भी उसी तरह से व्यवहार किया जा सके। मिद्यान के विनाश, गिनती 31 के वृत्तांत के लिए यही हमारा संदर्भ है। मिद्यान वे लोग हैं जो परमेश्वर के लोग नहीं हैं, और जिन्होंने जानबूझकर परमेश्वर के लोगों को उससे दूर कर दिया है।

अध्याय 31 की पहली दो आयतें प्रकाश में लाती हैं कि वास्तव में मिद्यान के विरुद्ध युद्ध यहोवा का प्रतिशोध है, और यह इस्राएल ही है जिसे यहोवा की ओर से यह प्रतिशोध लेना है। इसलिए, उन्हें इस पवित्र युद्ध को ठीक उसी तरह पूरा करना है जैसा वह आदेश देता है।

सबसे पहले, प्रभु ने आदेश दिया कि सेना इस्राएल के सभी 600,000 पुरुषों का उपयोग करके युद्ध नहीं करेगी, बल्कि इस समूह में केवल 12,000 चुने हुए सैनिक शामिल होंगे, 12 गोत्रों में से प्रत्येक से 1,000।

दूसरा, प्रभु ने आदेश दिया कि एलीआजर महायाजक का पुत्र पीनहास इस अभियान में युद्ध पुजारी होगा। प्राचीन संस्कृतियों के प्रत्येक युद्ध में प्रत्येक पक्ष अपने देवताओं के प्रतिनिधि के रूप में पुजारियों को साथ लाता था, इस्राएल भी इससे अलग नहीं था। इन पुजारियों के साथ विभिन्न अनुष्ठानिक वस्तुएँ भी साथ ले जाती थीं, जिनमें विभिन्न युद्ध निर्देशों को सुनाने के लिए शॉफर शामिल थे, जैसा कि हमने फिल्मों में बिगुल बजाने वालों को करते देखा है। पीनहास इस्राएली सेना का नेतृत्व नहीं कर रहा था: वह मूल रूप से पादरी था, जो केवल पुरोहिती सेवा करने के लिए वहाँ था। लेकिन यह इरादा है कि हम ध्यान दें कि यह पीनहास ही था जो 12,000 के साथ गया था: क्योंकि यह पीनहास ही था जिसने मिद्यानी महिला को भाला मारा था जो एक इब्रानी आदमी के साथ यौन संबंध बना रही थी (उन दोनों को मार डाला), और इस तरह वह विपत्ति समाप्त हो गई जो यहोवा ने इस्राएल पर उनके व्यभिचार के लिए लायी थी।

जैसा कि सभी प्राचीन साहित्य के अलावा पवित्र शास्त्रों में बहुत ही अनोखा है, हमें युद्ध का कोई विस्तृत विवरण नहीं मिलता, हार के मुँह से छीनी गई जीत का कोई दिलचस्प विवरण नहीं, और व्यक्तिगत वीरता की कोई कहानी नहीं। पद 7 में बस इतना बताया गया है कि इस्राएलियों ने मिद्यानियों के खिलाफ मैदान में कदम रखा और उन्हें नष्ट कर दिया: उन्होंने हर मिद्यानियों को

मार डाला। बस परिणाम कभी संदेह में नहीं था; प्रभु उनके आगे चले गए, यह उनकी सेना थी, इसलिए यह एक निश्चित जीत थी इससे पहले कि वे कभी भाला या तलवार उठाते, या मिद्यानियों के प्रतिद्वंद्वी की आँखों में देखते।

देखिए, यहाँ एक सिद्धांत है जिसे समझना तो आसान है, लेकिन हमारे लिए उस पर विश्वास करना और उसे आत्मसात करना वाकई मुश्किल है: यह है कि जब प्रभु अपनी सेना को युद्ध में भेजते हैं, तो यह वास्तव में धर्मनिरपेक्ष सेनाओं की तरह संभावित परिणामों की एक श्रृंखला के साथ एक प्रतियोगिता नहीं होती है। यह ऐसी स्थिति नहीं है जहाँ रणनीतियाँ और तरकीबें थी सेनाओं का आकार भी परिणामों को निर्धारित करता है। जब प्रभु अपनी सेना को युद्ध में भेजते हैं, और वे उनके आदेशानुसार व्यवहार करते हैं, तो यह वास्तव में मनुष्यों के लिए है कि वे केवल यह देखें कि यहोवा ने पहले से क्या तय किया है और दोनों पक्षों के लिए उनकी महिमा का प्रदर्शन किया जाए। किसी भी तरह से यह एक निष्पक्ष लड़ाई नहीं है जिसमें दूसरे पक्ष को वास्तव में जीतने का अवसर मिलता है।

गिनती अध्याय 31:14 को पुनः पढ़ें – समाप्त

अब, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि मैंने अभी आपको क्या बताया: वास्तव में इस्राएलियों ने हर मिद्यानी पुरुष को मार डाला, लेकिन यह केवल वे मिद्यानी थे जो उत्तरी ट्रांस-यर्डन क्षेत्र में रहते थे। विभिन्न मिद्यानी गोत्रों और कुलों की बस्तियाँ मोआब से लेकर अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पश्चिमी छोर तक फैली हुई थीं। और वे एक बड़े एकीकृत राष्ट्र या लोगों के समूह नहीं थे। इसलिए, मिद्यान के सभी वंशजों का सफाया नहीं किया गया।

इन मिद्यानियों के कई गोत्रों और शहर-राज्यों के राजाओं को भी मार दिया गया था, और उनके नाम हमारे लिए सूचीबद्ध हैं। हालाँकि, मेरे लिए जो अधिक दिलचस्प है, वह यह है कि बालाम मेसोपोटानिया का जादूगर जिसे राजा बालाक ने उसके लिए इस्राएल को शाप देने के लिए नियुक्त किया था (लेकिन नहीं किया) को भी इस्राएलियों ने मार डाला था। पहले के अध्याय में हमें बताया गया है कि बालाम यहोवा और राजा बालाक से मुठभेड़ के बाद (खाली हाथ) घर वापस चला गया: जाहिर है, वह वापस आ गया, बड़ी गलती।

पद 9 में हमें बताया गया है कि मिद्यानियों की महिलाओं और बच्चों के साथ-साथ उनके सभी पशुओं को भी जब्त कर लिया गया और जिन शहरों में मिद्यानियों का निवास था, उन्हें जला दिया गया। ये प्रथाएँ उस दिन के लिए पूरी तरह से मानक थे। मुझे यहाँ एक ऐसी बात पर टिप्पणी करने की अनुमति दें जो खो सकती है: किसी गोत्र या राष्ट्र को हराने वाले की महिलाओं

और बच्चों (और कुछ मामलों में, पुरुषों) को जब्त करके अपने स्वयं के गोत्र या राष्ट्र का विस्तार करना सामान्य प्रक्रिया थी। इस्राएलियों ने भी ऐसा ही किया। वास्तव में हम देखते हैं कि याकूब (मिद्यान के साथ इस युद्ध से 500 साल पहले) ने अपने गोत्र को लगभग रातोंरात बढ़ा दिया था, जब उसके बेटों ने शेकेम शहर पर बदला लेने के लिए गुमराह करने वाले हमले का नेतृत्व किया और सभी पुरुषों को मार डाला (पहचाना लगता है?), उन्होंने शेकेम की सभी महिलाओं और बच्चों को गुलाम बना लिया। हम नहीं जानते कि हम यहाँ कितने लोगों के बारे में बात कर रहे हैं, लेकिन यह काफी बड़ा रहा होगा, और इसने याकूब के परिवार के आकार को बढ़ा दिया होगा। यही बात यहाँ गिनती 31 में इन मिद्यानियों के बारे में होने वाली थी। इसलिए जब भी इस्राएल ने किसी राजा या किसी अन्य को हराया, तो उस राज्य की आबादी का कुछ हिस्सा इस्राएल का हो गया। इसलिए इस्राएल का आकार इब्रानी महिलाओं से पैदा होने वाले अतिरिक्त बच्चों से कहीं अधिक बढ़ गया।

लेकिन ध्यान दें कि यह कैसे दर्शाता है कि इस्राएल के भीतर वंशावली शुद्धता उनके आरंभ से ही व्यावहारिक रूप से असंभव थी। उन विजित लोगों में से अधिकांश को इस्राएल में समाहित कर लिया गया और कुछ ही समय में उन्हें विदेशी नहीं, बल्कि इस्राएली माना जाने लगा। यह बस जनजातीय समाज का तरीका है।

मिद्यानी युद्ध की लूट को वापस वहीं लाया गया जहाँ मूसा और इस्राएल ने डेरा डाला था, जो यरीहो से ज़्यादा दूर नहीं, यर्दन नदी के थोड़ा पूर्व में था और शायद लौटने वाले सैनिकों को यह देखकर आश्चर्य हुआ होगा कि जब मूसा ने मिद्यानी महिलाओं को साथ में देखा तो वह क्रोधित हो गया। मूसा इतना क्रोधित क्यों था? क्योंकि ये वे महिलाएँ थीं जिन्होंने इब्रानी पुरुषों को गुमराह किया था (मुझे लगता है कि यह बहुत आसान है), और इन महिलाओं के कार्यों के परिणामस्वरूप 24,000 इस्राएलियों को यहोवा ने मार डाला था।

हमारे लिए यह भी पुष्टि की गई है कि यह बालाम ही था जिसने इन मूर्तिपूजक महिलाओं को इब्रानी पुरुषों को लुभाने और इस तरह से इस्राएल को कमज़ोर करने का शानदार विचार दिया था। बालाम ने भले ही इस्राएल पर कोई आधिकारिक श्राप जारी न किया हो, लेकिन उसने निश्चित रूप से इस्राएल में मूर्तिपूजक महिलाओं को घुसाने की अपनी नारकीय योजना के जरिए उन्हें श्रापित किया।

इसलिए मूसा ने आदेश दिया कि सभी कुंवारी महिलाओं को छोड़ दिया जाना चाहिए (लेकिन निश्चित रूप से उन्हें दास के रूप में रखा जाना चाहिए), और सभी महिलाओं को जो

यौन रूप से अनुभवी हैं, उन्हें मार दिया जाना चाहिए। तर्क सरल है. केवल उन महिलाओं को ही मार दिया जाना चाहिए जो यहोवा के विरुद्ध इस्राएलियों के धर्मत्याग में शामिल थीं। एक महिला जिसने स्पष्ट रूप से कभी किसी के साथ यौन संबंध नहीं बनाए, एक इब्रानी की तो बात ही छोड़िए, उसे क्यों मारा जाना चाहिए? इस्राएली पुरुषों को केमोश की उपासना करने के लिए राजी करने में उनका कोई हाथ नहीं था।

लड़कों की हत्या को स्वीकार करना थोड़ा कठिन है। फिर भी यह उस युग के लिए दो कारणों से काफी सामान्य है। पहला, यह एक लड़के का कर्तव्य था कि जब वह बड़ा हो जाए, तो उसे अपने पिता की मौत का बदला लेना था। एक इब्रानी ने इन लड़कों में से हर एक के पिता को मार डाला और इसलिए उन्हें जीवित रहने देने का मतलब था कि समय के साथ उनसे निपटना होगा और दूसरा, चूँकि बच्चों को पिता का नाम दिया गया था और यह एक पति का अधिकार था कि वह अपनी पत्नी की सारी संपत्ति पर कब्जा करे, इसलिए मूसा नहीं चाहता था कि इस मिश्रण में कोई भी मिद्यानी पुरुष इस्राएल को प्रदूषित करे या उससे धन और भूमि छीन ले।

अब हम पद 19 से शुरू होने वाले इस दिलचस्प दृश्य पर आते हैं, जिसमें शुद्धिकरण की प्रक्रिया होनी चाहिए। पद 13 में हमें बताया गया है कि मूसा और महायाजक एलीआजर इस्राएल के शिविर से बाहर निकलकर वापस लौट रही सेना का स्वागत करने गए। यह विजेताओं का सम्मान करने के लिए नहीं बल्कि इस्राएली शिविर में अशुद्धता को प्रवेश करने से रोकने के लिए किया गया था।

सैनिक अब अशुद्ध थे क्योंकि उन्होंने मृत्यु को छुआ था, उन्होंने हत्या की थी और भले ही उन्होंने ऐसा न किया हो, उन्होंने निस्संदेह एक शव को छुआ था और कम से कम शवों से भरे मैदान के बीच में खड़े थे। इसके अलावा, पकड़े गए लोग अशुद्ध थे (क्योंकि वे इब्रानी नहीं थे और क्योंकि, परिभाषा के अनुसार, वे अन्य देवताओं से प्रदूषित थे) और उन्हें शिविर में चलने की अनुमति नहीं दी जा सकती थी। इसलिए हम पाते हैं कि सफाई के लिए 7-दिन की मानक अवधि का आदेश दिया गया था: सैनिकों को शिविर के बाहर रहना था और लाल बछिया (विशेष ईश्वर-निर्धारित मिश्रण जो विशेष रूप से मृत्यु की अशुद्धता को साफ करने के लिए इस्तेमाल किया जाता था) की राख से दो बार छिड़का जाना था, तीसरे दिन और सातवें दिन। इसके अलावा उनके कपड़े धोने थे और अन्य वस्तुएँ जिनके संपर्क में वे आए थे उन्हें अनुष्ठानपूर्वक साफ करना था। यह सब लैव्यव्यवस्था कानूनों के अनुसार था। पद 22 में मिद्यान से जब्त की गई धातुओं की एक सूची शुरू होती है जिन्हें शिविर में लाने के लिए भी शुद्ध किया जाना चाहिए। मिद्यानियों से ली

गई सभी वस्तुओं को शुद्ध किया जाना चाहिए, लेकिन ध्यान दें कि मिट्टी के बर्तनों और घड़ों का कोई उल्लेख नहीं है (जिनकी गिनती हजारों में रही होगी); ऐसा इसलिए है क्योंकि मिट्टी के बर्तन छिद्रयुक्त होते हैं और इसलिए उन्हें साफ नहीं किया जा सकता, इसलिए उन्हें नष्ट कर दिया जाना चाहिए।

जब्त की गई वस्तुओं के शुद्धिकरण की प्रक्रिया में उन्हें आग से गुजारना पड़ता है। हालाँकि, जो वस्तुएँ जल सकती हैं या बहुत आसानी से पिघल सकती हैं (जैसे काँच), उन्हें सिर्फ पानी से शुद्ध किया जा सकता है।

विभिन्न वस्तुओं के शुद्धिकरण पर इस खंड को रब्बियों द्वारा विस्तारित और संहिताबद्ध किया गया है, जैसे कि किसी भी खाना पकाने के बर्तन को शुद्ध करने के लिए उसे तब तक गर्म किया जाना चाहिए जब तक कि वह सफेद-गर्म न हो जाए, चाँदी के बर्तन को जलाया जाना चाहिए, लेकिन काँच, जो गैर-छिद्रपूर्ण है, आम तौर पर ठंडे पानी में भिगोया जा सकता है। अधिकांश पारंपरिक यहूदी परिवार आज भी फसह और मात्ज़ाह के पर्व के लिए इस प्रक्रिया का पालन करते हैं।

अब जब बंदियों का निपटान पूरा हो गया है और लोगों और वस्तुओं का शुद्धिकरण हो गया है, तो युद्ध की लूट का सबसे महत्वपूर्ण वितरण होता है। हर सैनिक को लूट के कुछ हिस्से की उम्मीद थी (और वह इसका हकदार भी था) लेकिन यह नेताओं पर निर्भर था कि वे तय करें कि लूट का माल कैसे बाँटा जाए और यहाँ बताया गया है कि यह कैसे किया जाना था:

12,0000 सैनिक जिन्होंने वास्तव में लड़ाई लड़ी थी, उन्हें लूट का आधा हिस्सा मिला बाकी आधा हिस्सा शेष 3 मिलियन इस्राएलियों को दिया गया। दिलचस्प बात यह है कि सैनिकों को लूट का बड़ा हिस्सा मिला जबकि नागरिकों को थोड़ा सा मिला, लेकिन यह वास्तविक लड़ाकों के इनाम से बहुत कम था। मैं दिलचस्प इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि हमारे समय में सैनिक आम तौर पर सरकार में सबसे कम वेतन पाने वालों में से हैं, और फिर भी वे ही सबसे बड़ा बलिदान देते हैं। नागरिक जो घर पर सुरक्षित रहते हैं और अमेरिका में अक्सर अपना समय हमारे सैनिकों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन में बिताते हैं जो अपनी जान जोखिम में डालते हैं, सैनिकों की बहादुरी का सबसे बड़ा लाभ उठाते हैं, जबकि सैनिक को सबसे कम मिलता है। समझिए।

लेकिन, हमेशा की तरह, इस्राएल में पवित्र युद्ध में प्राप्त की गई हर चीज प्रभु की संपत्ति थी और इसलिए एक निर्धारित हिस्सा उसे जाना था। पुरोहिती की स्थापना के साथ इसका मतलब था कि पुजारी (और कुछ मामलों में आम लेवियों) को प्रभु के हिस्से के प्राप्तकर्ता होने थे। ध्यान

दें कि सैनिकों को मिलने वाली लूट के आधे हिस्से में से उन्हें केवल अपने हिस्से का 1/500वाँ हिस्सा (1 प्रतिशत का मात्र 2/10वाँ हिस्सा) "दशमांश" देना था। दूसरी ओर इस्त्राएल के सभी नागरिकों को जो कुछ भी मिला उसका 1/50वाँ हिस्सा, यानी 2 प्रतिशत "दशमांश" देना था। जैसा कि यह प्रतीत होता है, इसके विपरीत, यह वास्तव में नागरिकों के लिए इतना दंड (या सैनिकों के लिए इनाम) नहीं है, बल्कि यह व्यवहारिकता पर आधारित एक अच्छी तरह से स्थापित प्रणाली है। यह अच्छी तरह से प्रलेखित है कि मंदिर में सेवा करने वाले प्रत्येक पुजारी के लिए 10 लेवियों का एक पुजारी आदेश स्थापित किया गया था (यह आदर्श था)। यही लेवियों और पुजारियों का अनुपात 10:1 था। अब याद करें कि लेवी सभी पुजारी नहीं थे। ज़्यादातर लेवी मंदिर के आसपास काम करने वाले ब्लू-कॉलर कर्मचारी थे। केवल पुजारी ही बलिदान और अनुष्ठान कर सकते थे, आम लेवी कभी नहीं। तो ध्यान दें कि लेवियों (कुल मिलाकर) को पुजारियों से 10 गुना ज़्यादा मिलता था (लेवियों के लिए 1/50वाँ दशमांश, बनाम पुजारियों के लिए 1/500 वाँ दशमांश)। लेकिन चूँकि पुजारियों की तुलना में लेवियों की गिनती 10 गुना थी, इसलिए जब तक हर व्यक्ति को उसका हिस्सा मिलता, तब तक हर पुजारी और हर लेवी को बिल्कुल बराबर राशि मिलती थी। मुझे लगता है कि एक और दिलचस्प बात यह है कि ईश्वर की अर्थव्यवस्था में मनुष्य कैसे सोचते हैं, इसके विपरीत। ईसाई सेवकाई में हमेशा एक वेतन पदानुक्रम स्थापित किया जाता है जिसमें वरिष्ठ मंत्री को सबसे ज़्यादा मिलता है, और फिर प्रत्येक कनिष्ठ मंत्री को क्रमशः कम मिलता है। कभी-कभी अंतर बहुत बड़ा नहीं होता है, तो कभी-कभी यह बहुत बड़ा होता है। शायद बाइबिल के उदाहरण के प्रकाश में इस पर फिर से विचार करने की ज़रूरत है।

पशुओं की लूट की एक लंबी सूची सूचीबद्ध है और गिनती आश्चर्यजनक रूप से बहुत बड़ी है। इतनी बड़ी कि अधिकांश विद्वान कहते हैं कि यह संभव नहीं है। अब, मैं वास्तव में यह नहीं कह सकता कि ऐसा है या नहीं: लेकिन मैं यह कह सकता हूँ कि उन सभी स्थानों में से जहाँ इतनी गिनती में पशुधन संभव था, यह ठीक वही स्थान है जहाँ यह सब हुआ। ऊपरी ट्रांस-यर्डन बहुत अच्छा चारागाह है। वास्तव में अगले अध्याय तक हम पाएँगे कि 12 गोत्रों में से कुछ लोग वहाँ रहना चाहते हैं और इसी कारण से कनान में नहीं जाना चाहते हैं।

जितने अच्छे और निस्वार्थ नेता हम सभी जानते हैं, उतने ही शायद व्यक्तिगत प्रसिद्धि और धन के लिए भी हैं। यहाँ गिनती 31 के अंतिम 7 पदों में, हमें ईश्वरीय नेतृत्व का एक सचमुच दिल को छू लेने वाला उदाहरण मिलता है। सार्जेंट से लेकर शीर्ष व्यक्ति तक सेना के विभिन्न स्तरों के सभी कमांडरों ने युद्ध की लूट के रूप में अपने द्वारा लिए गए सभी सोने और चाँदी के गहने प्रभु को दे दिए। जब लड़ाई खत्म हो गई तो उन्होंने (मानक प्रक्रिया के रूप में) जनगणना की और

पाया कि, चमत्कारिक रूप से, एक भी इस्राएली सैनिक मारा या लापता नहीं हुआ था। ये बहादुर नेता इतने आभासी थे, तथा अपने ऊपर प्रभु के हाथ को पहचानते हुए, कि उन्होंने अपने लोगों के जीवन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए अपना पूरा व्यक्तिगत हिस्सा पुरोहिताई को सौंप दिया। नियमित पैदल सैनिक को अपना पूरा हिस्सा रखने की अनुमति थी।

इस दिन की स्मृति के रूप में पुजारियों ने इन सेनापतियों द्वारा दी गई बहुमूल्य धातुओं से तम्बू में प्रयोग के लिए सभी प्रकार की अनुष्ठानिक वस्तुएँ बनाईं।

मैंने इस्राएल के नेताओं के रवैये और कार्य पर जोर दिया क्योंकि हम उनमें यह समझ बढ़ती हुई देखते हैं कि प्रभु उनसे क्या अपेक्षा करता है और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह कम से कम आंशिक रूप से एक प्रतिबद्ध और वफादार इस्राएली नेतृत्व का परिणाम है कि हम जल्द ही इस्राएल को यर्डन नदी को पार करके कनान में प्रवेश करते हुए देखेंगे, और कम नुकसान के साथ, और हल्के ढंग से युद्ध के बाद युद्ध जीतते हुए देखेंगे। परमेश्वर मानव नेताओं से बहुत अपेक्षा करता है, वह उन मानव नेताओं से और भी अधिक अपेक्षा करता है जो उसकी सेवा करते हैं।

आइये अध्याय 32 पर चलते हैं।

गिनती अध्याय 32 पूरा पढ़ें

वादा किए गए देश पर विजय की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। फिर भी इस्राएल अभी तक कनान में प्रवेश भी नहीं कर पाया है। बल्कि यह यर्डन का पूर्वी किनारा है, ट्रांस-यर्डन का क्षेत्र जिसे उन्होंने सबसे पहले जीता है और यह क्षेत्र वादा किया हुआ देश नहीं है। इसलिए, जब रूबेन और गाद के गोत्रों ने जिनके पास बहुत सारे मवेशी थे (वास्तव में, इब्रानी शब्द मिकनेह है, जिसका अर्थ सामान्य रूप से पशुधन है, गायों का एक बड़ा झुंड नहीं) मूसा के पास यह कहते हुए आते हैं कि वे उस भूमि में रहना और बसना पसंद करेंगे जो पहले मोआब थी, मूसा बिल्कुल भी खुश नहीं है। हम जो देखते हैं वह यह है कि गाद और रूबेन के नेताओं ने अपने अनुरोध के साथ स्पष्ट रूप से किसी प्रकार की नेतृत्व परिषद से संपर्क किया क्योंकि एलीआजर महायाजक मौजूद थे, साथ ही इस्राएल के सरदार, शायद 12 आदिवासी नेताओं का मतलब था।

मूसा का पहला उत्तर था: तो क्या तुम उस देश में पीछे रहना चाहते हो जिसे जीतने के लिए सभी गोत्रों ने मिलकर काम किया था, और फिर तुम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना चाहते हो

जबकि अन्य 10 गोत्रों उस भूमि के लिए लड़ती हैं जिसे प्रभु ने तुम्हारे बिना इस्राएल के लिए अलग रखा है?

मूसा जितना भयभीत है, उतना ही क्रोधित भी है। परिस्थिति के सैन्य पहलू से भयभीत नहीं है, यानी कि सेना का कुछ छोटा होना, बल्कि, यह है कि लगभग 40 साल पहले नेतृत्व परिषद के कुछ लोगों ने कनान में प्रवेश करने से मना कर दिया था और परिणाम बहुत बुरे थे। वह निश्चित रूप से यह नहीं देखना चाहता था कि प्रभु इस्राएल के साथ जो कुछ भी करेगा, वह सामूहिक रूप से, इस्राएल के एक हिस्से के फिर से आगे न बढ़ने की सजा के रूप में होगा और इसलिए मूसा सभी को याद दिलाता है कि बहुत पहले कादेश में उसके साथ क्या हुआ था, और ऐसा क्यों हुआ था, और यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे दोहराया जाए।

हम अगली बार अध्याय 32 से आगे बढ़ेंगे।